अनाजके रूपमें मालगुजारी

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १२ सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला अंक २५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २२ अगस्त, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

यह परचा

हिन्दुस्तानी जबान और नागरी-अुर्दू दोनों लिखावटोंमें 'हरिजन'के पैग़ामको लोगों तक पहुँचानेमें दिलचस्पी रखनेवाले भाअी बहनोंसे अिस परचेका मौजूदा हाल बता देना जरूरी मालूम होता है। पाठकोंको याद होगा कि 'हरिजनसेवक' शुरूमें सिर्फ नागरी लिपिमें छपता था। यह जरूर था कि 'हरिजन'का अेक अुर्दू तरजुमा भी कुछ अरसे तक स्वतंत्र रूपसे अेक दो जगहसे निकलता था। लेकिन, देशकी कमनसीबीसे दिनोंदिन हिन्दू मुसलमानोंमें आपसी खिंचाव बढ़ता गया, और अुसी तरह हिन्दी-अुर्दूका झगड़ा भी बढ़ता गया। नतीजा यह हुआ कि हिन्दूके दिलमें हिन्दीकी और मुसलमानके दिलमें अुर्दूकी तरफ़दारी पैदा हुअी, चाहे वह हिन्दू दिल्ली और लाहौरका रहनेवाला हो और मुसलमान बम्बअी और हैदराबाद (दक्खन) का रहनेवाला हो।

वैसे तो हर जिन्दा जबानमें बीस पच्चीस सालमें हमेशा फर्क पड़ ही जाता है। अनेक नये शब्द दाखिल होते हैं, नये मुहावरे पैदा होते हैं, व्याकरण (क़वाअिद) और लेखन (हिज्जे) का ढंग भी बदल जाता है, और कअी पुराने अच्छे लफ़्ज़, मुहावरे वगैरा भूले भी जाते हैं। अक्सर यह फ़र्क़ अनजानमें होता है, और बोलीमें मिल जाता है। कभी कभी खास कोशिशके साथ भी नये लफ़्ज़ बनाये जाते हैं। बेशक, अिसमें शब्दोंको गढ़नेवाला अुस प्राचीन या दूसरी किसी भाषाका सहारा लेता है, जिसका अुसे ज्यादा परिचय होता है। अिस तरह हिन्दुस्तानीमें संस्कृत और अरबी-फारसीसे तथा कअी अंग्रेजीसे भी बने हुअे शब्दोंका बढ़ावा होना न कोअी ताज्जुबकी बात है और न खेदकी ही। गुजराती, मराठी, बंगाली आदि सब भाषाओंमें अैसा हुआ है। लेकिन जब भाषाकी खिदमत करनेकी अिस कोशिशके साथ जाति जातिके बीचके मनमुटाव और नफरतका जहर मिल जाता है, तब सारी बात बदल जाती है।

गांधीजीको हिन्दी और नागरीसे कोअी नफरत नहीं थी, हो ही नहीं सकती थी। वही जबान अुनके लिअे ज्यादा कुदरती थी, जिसमें ज्यादातर संस्कृत लफ़्ज़ होते थे। अुर्दू लिखावटका मुहावरा बढ़ानेकी जी-जानसे कोशिश करते हुअे भी अुन्हें नागरीका ही अच्छा परिचय था। लेकिन साथ ही अुन्हें अुर्दू बोली या लिपिसे किसी तरहकी घृणा नहीं थी; और न अुन्हें अुसका अैसा कोअी अन्धा मोह ही था कि वे किसी भी तरह अुसकी सच्ची-झूठी तरफदारी करना अपना फ़र्ज़ समझ लेते। वे जो हालत पैदा करना चाहते थे, वह थी हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख वगैरा जातियोंकी अेकता। कौमी अित्तेहाद अुनके जीवनका लक्ष्य (मिशन) था। हिन्दू-मुसलमान-सिक्खोंमें बढ़ते हुअे खिंचावका अुनके दिलमें बड़ा रंज था। कअी पार्टियोंने अिस खिंचावके बढ़ानेको ही अपने राजनीतिक (सियासी) मकसदोंको हासिल करनेका ज़रिया बना लिया था। हिन्दी-अुर्दू शैली और लिपिका भेद भी अिसी खिंचावको बढ़ानेका अेक हथियार बनाया गया था।

बड़े शहरोंको छोड़ दें, तो दरअसल जहाँ हिन्दू-मुसलमान मेलसे साथ साथ रहते हैं, वहाँ जो कुछ भी बोलनेका तरीका होता है, वह सभीका अेक-सा होता है। गुजरातमें गुजराती, महाराष्ट्रमें मराठी, बंगालमें बंगाली वगैरा। सब जातियों और धर्मोके बच्चे (अगर पढ़ते हैं तो) अेक ही स्कूलमें जाते हैं, साथ साथ खेलते कूदते हैं, अेक-सी ही किताबें पढ़ते हैं। बड़ोंकी भी वैसी ही बात होती है। अगर अुनकी जबानमें फ़र्क़ पड़ जाता है, तो वह सभीमें होता है, फिर चाहे अुस फ़र्क़के कारण अुनकी जबानमें संस्कृतके, अरबी-फारसीके, अंग्रेजीके या किसी और भाषाके शब्द शामिल हो जायँ। जरूरतके मुताबिक भाषा बढ़ती जाती है, और व्याकरणका भी विकास होता है। अपने अलग धर्मग्रन्थोंके कारण हरअेक धर्मवालेके कुछ खास शब्द और मुहावरे रहते हैं, पर अुनका अेक हद तक ही काम पड़ता है।

राष्ट्रभाषाके तौर पर गांधीजी जिस भाषाका प्रचार कर रहे थे और करना चाहते थे, वह हिन्दू, मुसलमान, वगैरा सबके लिअे और सबकी जबान थी। हिन्दीके नामसे भी वे अिसी भाषाको समझते थे, और वैसा समझकर ही अुन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलनका प्रमुखपद दो बार स्वीकार किया था और राष्ट्रभाषा प्रचार, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, वगैरा संस्थाओंको बढ़ानेका परिश्रम किया था।

लेकिन, जब अुन्हें यह दिखाअी दिया कि भाषाके जिस ढंगको वे राष्ट्रभाषा या हिन्दीके नामसे पहचानते थे, अुससे हिन्दी साहित्य सम्मेलनके दूसरे खिदमतगारोंका मतभेद था, और ये नेता भाषाके दूसरे ढंग पर जोर देना चाहते थे, तब गांधीजीको 'हिन्दुस्तानी' नामका आसरा लेना पड़ा और दूसरी संस्था कायम करनी पड़ी। अुनकी यह पक्की राय थी कि गंगा-जमनाके दोआबके जिन भागोंमें हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियोंकी बड़ी तादादमें बस्ती है, दोनोंके पढ़े-लिखे लोग हैं, और दोनोंके लिअे लिखनेवाले लेखक हैं, वे जिस किस्मकी बोली स्वाभाविक ढंगसे बरतें, वही हिन्दुस्तानके आम लोगोंकी जातिवादसे परे रहनेवाली भाषा हो सकती है। भाषाके अिस ढंगकी खिदमत करना या अैसी भाषाके ज़रिये लोगोंकी खिदमत करना अुनका कर्तव्य हो गया था। दोनों जातियोंमें मेल बढ़ानेके लिअे वह अेक जरूरी बात थी।

अिस तरह हिन्दुस्तानी भाषाका ढंग जनताके सामने पेश करना 'हरिजनसेवक'के पैग़ामका अेक हिस्सा हो गया, और दो लिपियोंवाली अेक ही बोलीमें यह पत्र निकलने लगा। हाँ, साहित्य-सेवा 'हरिजनसेवक'का मुख्य काम नहीं है। साहित्य अुसका साधन है। अुसके जरिये अुसका असली काम है लोगोंको अुन नेक विचारोंकी तालीम देना, जिनसे हमारा देश और अुसके सब लोग — सात लाख देहात और अुसमें बसनेवाले करोड़ों स्त्री और पुरुष — अेक अैसी कौम बनें और अेक अैसा राज कायम करें, जो सत्य, अहिंसा, नेकचलन, खुद मेहनत, भलाअी, मेलमिलाप आदिका दुनियाके सामने

www.vinoba.in

अनोखा नमूना पेश करे, और दुनियाको लड़ाओ, खूँखराबी, हिंसा वगैरा बुरे कामोंसे बचानेका रास्ता दिखावे। अिस मुख्य कामको सफल करनेके लिअे किस तरहके रचनात्मक कामोंको बढ़ाया जाय, अन्याय, झूठ, और हिंसाका किस तरह सत्य और अहिंसाके साधनसे मुकाबला किया जाय, वगैरा बातें सिखाना ही अिस परचेका असली काम है। नागरी और अुर्दू लिखावटोंमें हिन्दुस्तानी भाषामें, या अंग्रेजी, गुजराती, बंगाली वगैरा भाषाओंमें अिस परचेका निकाला जाना अिस मुख्य अुद्देश्यको पूरा करनेके लिअे ही है।

लेकिन यदि किसी भाषा या लिपिमें पढ़ने-पढ़ानेकी ख्वाहिश रखनेवाले लोग ही न हों, तो साफ़ है कि अुस भाषाके अखबार द्वारा 'हरिजन'का पैग़ाम पहुँचाया नहीं जा सकता। अंग्रेजी 'हरिजन' या गुजराती 'हरिजनबन्धु' चला है या चल सकता है, क्योंकि अुसे पढ़नेवाले अब तक अितनी संख्यामें हैं, जिससे अुसका चलाना मुश्किल नहीं है। लेकिन, खेद है कि नागरी और अुर्दू 'हरिजन-सेवक'की वैसी बात नहीं है। अिन दोनोंको पढ़नेवालोंकी संख्या अितनी नहीं है कि अिन अखबारोंको लम्बे समय तक चलाया जा सके। अिसमें भी अुर्दू परचेकी हालत तो बहुत ही कमज़ोर है। मुश्किलसे अुसकी २०० कापियाँ खपती हैं। अिसके मानी यह होते हैं कि जो हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख अुर्दूके जानकार हैं, अुन्हें या तो अिसमें कुछ फायदेमन्द और पढ़ने लायक चीज मालूम नहीं होती, या अिस परचेकी हस्तीके बारेमें वे जानते ही नहीं। यानी, किसीने अुर्दूके पाठकोंका ध्यान 'हरिजनसेवक'की ओर खींचा ही नहीं।

जो कुछ भी हो। असल बात यह है कि जिनका यह विश्वास हो कि हिन्दुस्तानी भाषामें और नागरी-अुर्दू लिखावटोंमें 'हरिजन'का सन्देश जनताको पहुँचाना चाहिये, अुन्हें अिस पत्रके चलानेमें मदद देनी चाहिये — अुर्दू पढ़नेवालोंको अुर्दू परचेके लिअे और नागरी पढ़ने-वालोंको नागरीके लिअे। नहीं तो जिसे लोग पढ़ते नहीं, अुसे छपाना बेकार होगा। और वह लम्बे अरसे तक चल भी नहीं सकता। नवजीवन प्रेस चाहता है कि आअिन्दा दो-अेक महीनोंमें 'हरिजनसेवक'की दोनों आवृत्तियोंके बारेमें साफ तौरपर यह पता लग जाय कि ये परचे चलाये जा सकते हैं या नहीं, या अिसमेंसे कौनसा परचा चलाया जा सकता है। जो अिन्हें पढ़ते हैं, अुन्हें अगर अुनका जारी रखना जरूरी मालूम होता हो, तो मैं अुम्मीद करता हूँ कि वे अैसी कोशिश करेंगे जिससे ये दोनों आवृत्तियाँ चालू रखना मुमकिन हो जाय।

नयी दिल्ली, १५-८-'४८ किशोरलाल मशरूवाला

अच्छे काम भी निष्फल क्यों हो जाते हैं?

नागपुरमें ५, ६, ७ जुलाअीको मिश्र खादके बड़े जानकारों और अुसमें दिलचस्पी लेनेवाले लोगोंकी अखिल भारतीय और प्रान्तीय सभा हुअी थी। मेरी गहरी दिलचस्पी होनेसे मैंने अुसमें जानेका निमंत्रण प्राप्त कर लिया था।

मध्यप्रान्तकी सरकार मिश्र खादकी योजनाको तीन सालसे चला रही है। यह योजना मुझे बहुत पसन्द आयी है, और मैं मिश्र खादके अुपयोगसे काफी अच्छे नतीजेपर पहुँचा हूँ। लेकिन अभी तक अुसमें बहुतसी खामियाँ बाकी हैं। अुनको दूर करनेके सुझाव मिश्र खादके जानकारोंके सामने रखने और अुनसे कुछ नअी बातें जाननेकी अिच्छासे मैं सभामें गया था। लेकिन भाषाकी वजहसे मुझे बहुत निराश होकर आना पड़ा; क्योंकि बहुतसा कारोबार अंग्रेजीमें ही चला, और मेरे लिअे अंग्रेजीका काला अक्षर भैंस बराबर है। मध्यप्रान्तके गवर्नर और प्रान्त तथा हिन्दी संघके खाद्य-मंत्री महोदयोंने सिर्फ मेरे ही लिअे हिन्दीमें भी अपने भाषणोंका सारांश देनेकी मेहरबानी की। लेकिन बादमें जब मैंने हिन्दीकी माँग की, तो सभापतिजी और दूसरे लोगोंने समयकी तंगी बताअी और कहा कि अिस सारी सभामें चूँकि मैं ही अकेला अंग्रेजी नहीं जानता, अिसलिअे मुझे बादमें किसीसे सारी कार्रवाअी समझ लेनी चाहिये। स्वास्थ्य-मंत्रीने अकेलेमें अपने भाव हिन्दीमें बता देनेका वचन भी दिया था। अिसपर सभामें खूब हँसी हुअी और तालियाँ भी बजीं। अिससे मुझे दुःख तो नहीं हुआ। लेकिन मैं सोचने लगा कि यह क्या मामला है। जो अिस योजनाको सफल बनानेवाले हैं, वे तो अंग्रेजी नहीं जानते। और जो अंग्रेजी जानते हैं, अुनसे कागज़ काले करने और कलमकी नोक या लकड़ीके अिशारेसे दूसरोंसे काम लेनेके सिवा कुछ बननेवाला नहीं है। तो यह नैया कैसे पार लगेगी? मैंने सभामें आये हुअे लोगोंके चेहरे गौरसे देखे, तो मुझे लगा कि सचमुच अपनी जातिका मैं अकेला ही हूँ। यह बात सच है कि अुस सभामें मद्रासके भाअी भी आये थे, जो हिन्दी नहीं समझते थे और जिन्हें खास निमंत्रण देकर बुलाया गया था। मैं तो अपनी अिच्छासे गया था। अिसलिअे मुझसे कहा जा सकता था कि 'भाअी, हमने तो अैसे ही लोगोंको बुलाया था, जो अंग्रेजी जानते हैं। आप तो जबरदस्ती घुस आये।' लेकिन अुन्होंने अैसा नहीं कहा और अपनी लाचारी ही दिखाअी। अुनकी अिस सज्जनतासे मेरा दुःख काफी हलका हो गया। लेकिन यह बात सूर्य-जैसी स्पष्ट है कि अगर अिस योजनाको या अिस प्रकारकी किसी योजनाको सफल बनाना है, तो जिन लोगोंके द्वारा सफल बनाना है, अुनकी ही भाषामें सरकार और सरकारके विशेषज्ञ बोलेंगे, लिखेंगे और विचार करेंगे और अुनका सहयोग लेंगे, तभी वे अपने कार्यमें सफल होंगे। वर्ना तो अुनकी तकदीरमें निष्फलताके सिवा दूसरा कुछ नहीं बदा है।

पाँच सालमें सरकार अंग्रेजी छोड़नेकी बात भी करती है। लेकिन किसीने नदीमें बहते रीछको कम्बल समझकर पकड़ा, तो रीछने ही अुसे पकड़ लिया। किनारे पर खड़े साथीने कहा, अरे कम्बल नहीं निकलता, तो तू अुसे छोड़कर बाहर आ जा। रीछके पंजेमें फँसे हुअे साथीने कहा, अरे भाअी, मैं तो कम्बलको छोड़नेकी खूब कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन कम्बल ही मुझे नहीं छोड़ रहा है! अिसी प्रकार अंग्रेजी भी हमारी सरकारसे लिपट गयी है। अगर अैसा ही हुआ, तो सरकारके हाथ निष्फलता ही आवेगी।

खैर! ता० ६ की सुबहसे करीब अेक बजे तक अखिल भारतीय सभाका सब काम अंग्रेजीमें चला। अुसमें काफी बातें अैसी थीं, जो मेरे जानने लायक थीं। और मुझसे भी अुन लोगोंको कुछ जाननेको मिलता। लेकिन वह न सधा। आखिरमें २ से ६ बजे तक प्रान्तीय सभाका कार्य हिन्दीमें चला, जिसमें बहुत थोड़े लोग थे।

अुस सभाके सामने मैंने मिश्र खादके अपने अच्छे और बुरे दोनों अनुभव बताये। मेरी भाषा कड़ी होनेसे कुछ लोगोंको मेरी बात चुभी भी होगी। लेकिन सबने अुसे बड़े प्रेम और धीरजसे सुना। अिससे मुझे आनन्द हुआ। लेकिन मुझे अितनेसे सन्तोष नहीं हुआ। मैं अपने विचार अुन लोगों तक पहुँचाना चाहता हूँ, जिनका मिश्र खादके साथ सीधा या परोक्ष सम्बन्ध है। और वे वहाँ हाजिर नहीं थे। मेरे खयालसे हिन्दुस्तानका अेक भी आदमी अिससे बरी नहीं है। क्योंकि सबके घरोंमें कचरा होता है, और सब लोग अन्न और भाजी खाते हैं।

जिस मिश्र खादकी मैं बात कर रहा हूँ, वह शहरोंके कचरे और पाखानेकी होती है। शहरके लोग खाद बनानेवाला कचरा, काँच, पत्थर, टीनके टुकड़े और टूटे हुअे बरतन वगैरा सब चीजें अेक ही जगहपर फेंक देते हैं। और भंगी लोग अुन्हें अेक ही साथ ले जाकर खादके गड्ढोंमें डाल देते हैं। नतीजा यह होता है कि धरती माताके खाद्यमें हम बहुतसा अखाद्य मिला देते हैं। अगर हमारी थालीमें अेक भी कंकरी आ जाती है, तो हम नाक भौं सिकोड़ने लगते हैं और भोजन बनानेवाली माँ-बहनोंपर हमारा मिजाज बिगड़ जाता है। अगर रसोअिये या पत्नीने यह भूल की हो, तब तो पूछना ही क्या? लेकिन हम धरती माताकी थालीमें ये सब चीजें डालनेमें क्यों नहीं शरमाते? शहरमें बसनेवाले कितने ही लोगोंको तो

www.vinoba.in

जिसका पता भी नहीं होगा कि हमारे कचरेका क्या बनता है और हमारे लिअे जो खाद्य आता है, वह कहाँसे आता है। लेकिन अगर हमको अपने कार्यमें सफल होना है, और देशको अकालसे बचाना है, तो किसान और शहरीका सम्बन्ध वैसा ही जोड़ना होगा, जैसा कि अेक कुटुम्बका आपसमें होता है। नहीं तो दोनों घाटेमें रहेंगे। खादमें ये सब विजातीय पदार्थ होनेसे दोहरा नुकसान होता है। अेक तो किसानोंको फिजूलका बोझा ढोना पड़ता है। दूसरा जमीनमें अैसी चीजोंके जानेसे जमीनको नुकसान पहुँचता है। काँचके टुकड़े तो बड़े ही खतरनाक होते हैं। अगर कोअी टुकड़ा किसी बैल या आदमीके पैरमें गड़ जाय, तो अुसके पैरको बेकार कर सकता है। कष्ट तो काफी देता ही है। अेक बार गाड़ी भरते समय मेरे हाथमें काँच लगा था, जिससे १५ रोज तक हाथमें पट्टी बँधी रही।

अिस बारेमें कअी मत हैं। कोअी कहते हैं कि ये चीजें तो खादमें आने ही वाली हैं, अिसलिअे किसानोंको छाननेका प्रबन्ध कर लेना चाहिये। दूसरे कहते हैं कि म्युनिसिपालिटियोंको खाद छानकर देना चाहिये। म्युनिसिपालिटीके अेक सज्जनने अुस रोज सभामें कहा कि 'हमें छाननेकी क्या गरज पड़ी है। किसान अपने आप छान लें। हमारे लिअे जो किसान बाजारमें अनाज लाता है, वह थोड़ा ही छानकर लाता है?' अिसका जवाब तो बहुत ही सीधा है। किसान अच्छेसे अच्छा माल बाजारमें लावे, तो भी शहरी लोग अुस मालमेंसे छाँटकर अच्छेसे अच्छा लेते हैं। कमसे कम सागभाजी और फलोंका तो अैसा ही होता है। तब क्या म्युनिसिपालिटियोंका यह धर्म नहीं हो जाता कि वे अच्छीसे अच्छी खाद देनेकी कोशिश करें, या किसान अुसमेंसे छाँटकर जितनी अच्छी हो अुतनी ही खाद पसन्द करे?

पर अिन बहसोंमें कोअी सार नहीं है। मेरी सूचना यह है कि शहरी लोगोंमें अिस बातका प्रचार किया जाय कि वे काँच, पत्थर और टीन वगैरा चीजें अलग डालें और सड़नेवाले पदार्थ अलग। म्युनिसिपालिटियोंको अिसके लिअे अलग अलग बरतन और अलग अलग अुठानेका प्रबन्ध करना चाहिये। अिससे लोक-शिक्षणका बड़ा काम हो जायगा। भंगी भी जब समझ लेंगे, तो वे अिन चीजोंको कभी नहीं मिलने देंगे। मिलनेपर घरवालोंको चेतावनी देते रहेंगे। और काँच तो बिक भी सकता है। पत्थर वगैरासे आसपासके गड्ढे भी भरे जा सकते हैं। २०'×६'×३' के गड्ढे पीछे ६ टन खादके हिसाबसे किसानोंको खाद दी जाती है। लेकिन अुसमें सचमुच ४ टन खाद भी होती है या नहीं, यह कहना बड़ा कठिन है। यह तो अेक प्रकारसे सोनेमें हलकी धातु मिलाकर बेचने-जैसी धोखेबाजी हो जाती है। अगर सरकारको अपनी योजना सफल करनी है, और जो म्युनिसिपालिटियोंको अपनी स्वच्छता रखनी और अपनी खादकी प्रतिष्ठा बढ़ानी है, तो किसानोंको शुद्ध खाद देनेका प्रबन्ध करना ही होगा। नहीं तो थोड़े ही दिनोंमें किसान अिस खादसे अिन्कार कर देनेके लिअे मजबूर हो जायँगे। अिससे म्युनिसिपालिटी और किसान दोनोंको नुकसान होगा।

अिसमें दूसरा दोष यह है कि अूपरसे तैयार खाद दिखाअी देनेपर भी नीचेसे काफी कच्ची रह जाती है। अिससे खाद निकालनेवालोंके स्वास्थ्य और फसल दोनोंको हानि पहुँचनेका डर रहता है। अिसलिअे खाद अमुक समयमें निश्चित रूपसे पक जाय, अिस तरह तैयार करने चाहियें। अगर अिसमें अितने सुधार कर दिये जायँ, तो सोनेमें सुगंधका काम हो जाय। म्युनिसिपालिटियाँ, अिसके खास जानकार, शहरी लोग और भंगी सब अपने अपने फर्ज बजानेकी कोशिश करेंगे, तो यह कार्य आज नहीं तो पाँच सालमें पूरी तरह सफल होकर ही रहेगा।

सेवाग्राम आश्रम, ता० ७–७–'४८ www.vinoba.in

बलवन्तसिंह

'सवाअी बम'

ग्लोब न्यूज़ अेजेन्सीकी खबर है कि अमेरिकाके वैज्ञानिकोंने अेक नये सवाअी अणुबमका आविष्कार किया है। वह आजके अणुबमसे हजार गुना ज्यादा बरबादी और तबाही करनेवाला है। वह यूरेनियमसे नहीं बल्कि भारी हाअिड्रोजनसे बनाया जाता है।

जब सारी दुनियाकी आम जनता बड़ी अुत्सुकतासे शान्तिका रास्ता देख रही है, तब कअी राष्ट्रोंके सत्ताधारी लोग ज्यादा बड़े पैमाने पर संहार और नाश करनेकी योजनायें बना रहे हैं। मालूम होता है कि पिछली दो लड़ाअियोंसे कमसे कम अिन सत्ताधारी लोगोंने कोअी सबक नहीं सीखा। हमें कहा जाता है कि रूस लगातार अपनी फौजी ताकत बढ़ाता जा रहा है, और अपनी अिस ताकतका प्रदर्शन करनेके लिअे समय समय पर बड़े पैमाने पर हवाअी परेड किया करता है। मार्शल स्टेलिनका पुत्र मेजर जनरल वासिली स्टेलिन रूसके नये आविष्कार जेट प्लेनकी युद्ध सम्बन्धी ताकत साबित करनेके लिअे जल्दी ही अेक बड़ा प्रदर्शन कर रहा है। और रूटरकी खबरके अनुसार, रूसी लोग अिस बातपर खुशी मना रहे हैं कि मित्र राष्ट्रोंके बनिस्बत अुनकी फौजी तैयारियाँ ज्यादा जोरदार हैं।

सिर्फ यूरोपकी ही यह हालत नहीं है। हमारा गरीब देश भी जो थोड़ी बहुत सम्पत्ति पैदा करता है, वह अुसकी हवाअी फौजका संगठन करनेमें खर्च की जाती है। सरकारका मकसद यह है कि हिन्दुस्तानकी हवाअी फौज पूर्वके सारे देशोंकी हवाअी फौजोंसे बढ़ी चढ़ी हो। हिन्द सरकारकी यह अुम्मीद है कि करीब २० महीनोंमें हिन्दुस्तानकी हवाअी फौजमें ४ लड़ाकू हवाअी जहाजोंके स्क्वाड्रन बढ़ जायेंगे। अुनमेंसे अेक स्क्वाड्रन बम फेंकनेवाले हवाअी जहाजोंका और दूसरा जेट प्लेनोंका होगा। जेट स्क्वाड्रनमें नयेसे नये जेट प्लेन होंगे। अिस योजनामें जो भारी खर्च होगा, वह तो होगा ही। लेकिन हमें अिस खर्चकी अितनी चिन्ता नहीं, जितनी अिस कार्यक्रमके पीछे रही मनोवृत्तिकी है। यह दिखाती है कि संहार करनेवाले हथियारोंके बलपर नाश करनेवाले हमारे बिलकुल नजदीकके पड़ोसी जापानके दर्दनाक अनुभवको देखते हुअे भी हमारे नेता अुसी फौजी ताकत पर अपनी श्रद्धा रखते हैं।

हमें अपनी जलसेना बनानेमें दूसरे राष्ट्रोंके बेकार मानकर छोड़े हुअे जहाजोंको अपनाना पड़ता है। हम दूसरे देशोंके अुतारे हुअे कपड़ों और जरूरतसे ज्यादा बड़े जूते पहनकर खुश हो रहे हैं, और वे हमारे पैसेसे अपने लिअे नयीसे नयी युद्ध सामग्रीसे लैस नये लड़ाकू जहाज बनवा रहे हैं! अिस तरह हम अुनकी सेकंड हेण्ड (वापरी हुअी) चीजोंके खरीदार बन रहे हैं। हालमें ही हमारी सरकारने अिंग्लैण्डका पुराना लड़ाकू जहाज़ 'अेचिलीज़' खरीदा है और लार्ड माअुण्टबैटन आशा करते हैं कि हम दो विमान-वाहक जहाज और दो क्रूज़र ब्रिटेनसे और भी खरीद लेंगे। अिस तरह अिंग्लैण्ड अपना लड़ाअीका बेकार सामान बहुत अूँचे दामोंमें हमें बेचकर हमारा कर्ज चुकाना चाहता है।

हमने आशा की थी कि आज़ादी पा लेनेपर हमारे नेता दुनियाको यह दिखा देंगे कि हिन्दुस्तान लड़ाअियोंके जरिये किसी समस्याको हल करनेमें कभी विश्वास नहीं करता। अुसका तो विश्वास है कि राष्ट्र राष्ट्रके बीचकी समस्यायें आपसी सद्भावना, समझौते और दोस्तीसे ही हल की जा सकती हैं। लेकिन वे दूसरे ही रास्ते जा रहे हैं। अिसीलिअे, अब वह समय आ गया है कि देशकी आम जनता राष्ट्रके कारोबारमें दिलचस्पी ले और देशके सामने यह जो संपूर्ण हिंसाका कार्यक्रम रखा जा रहा है, अुसे रोके।

(अंग्रेजीसे)

जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक
२२ अगस्त १९४८

अनाजके रूपमें मालगुजारी

अिसी अंकमें दूसरी जगह पाठकोंको श्री विनोबाके अुस भाषणकी रिपोर्ट मिलेगी, जो अुन्होंने पिछली ६ अगस्तको राजघाटपर दिया था। अुसमें अुन्होंने सुझाया है कि किसानोंसे अनाजके रूपमें मालगुजारी वसूल की जाय। क्योंकि अनाजके बढ़ते हुअे दामोंको रोकनेका यही अेक अुपाय है।

अिस प्रस्तावके पीछे रही दलील बिलकुल सीधी और सरल है। अगर कोअी आदमी किसी चीजकी कीमत अेक खास सतहपर रखना चाहता है, और अगर वह चीज ग्राहकोंको बाजारमें न मिल सके, तो अुसे वह चीज बेचनेके लिअे तैयार रहना चाहिये, और ग्राहकोंकी माँग पूरी करनेकी ताकत रखनी चाहिये। अिसका मतलब यह हुआ कि अुस आदमीके पास अैसी चीजका काफी संग्रह होना चाहिये। हिन्द सरकार किसानोंसे अनाज लेकर, विदेशोंसे अनाज मँगवाकर और अिस तरह हासिल किये हुअे अनाजको रेशनकी दुकानोंके जरिये लोगोंमें बँटवाकर अैसी कोशिश कर भी रही है। सरकारकी किसानोंसे अनाज लेनेकी नीति जनप्रिय नहीं है, क्योंकि किसानको हमेशा यह महसूस होता है कि सरकार अुसके अनाजकी जो कीमत देती है, वह अुससे कम है, जो अुसे खुले बाजारमें मिल सकती है। अुसके जनप्रिय न होनेका दूसरा कारण यह भी है कि किसानको अपनी जरूरतें पूरी करनेके लिअे जितना अनाज बेचना ठीक मालूम होता है, अुससे ज्यादा अनाज अुससे जबरन खरीदा जाता है। सरकार जिस कीमतमें अनाज खरीदती है, अुससे कम कीमतमें रेशनकी दुकानोंके जरिये लोगोंको बेचनेपर भी किसानोंकी यह भावना बनी रहती है। अिसके अलावा, अिसमें दोहरा सौदा करना पड़ता है। किसान अपनी पैदावारका अेक हिस्सा नकद रकम पानेके लिअे बेचता है, ताकि वह जमीनकी मालगुजारी चुका सके। मेरा विश्वास है कि यह हिस्सा वह या तो सीधे ग्राहकोंको बेचता है या फिर किसी थोक व्यापारीको। अिस तरह जो पैसा अुसे मिलता है, अुससे वह मालगुजारी चुकाता है। अिसी पैसेसे सरकार फिर किसानोंसे अनाज लेती है और संग्रह करती है। अगर सरकार नकद पैसेके बजाय अनाजके रूपमें किसानोंसे मालगुजारी वसूल करे, तो यह सब झंझट मिट जाय या कम हो जाय।

लेकिन मैं जानता हूँ कि अनाजके रूपमें मालगुजारी चुकानेके रिवाजको किसान पसन्द नहीं करते। कारण यह है कि अिसका सम्बन्ध देशमें आम तौरपर पाये जानेवाले बटाअीके अुस रिवाजके साथ है, जिसमें किसानोंको जमीनके मालिकका हिस्सा अनाजके रूपमें देना पड़ता है। सब कोअी जानते हैं कि बटाअीके रिवाजके मुताबिक शिकमी काश्तकारको खेतीमें पैदा किया हुआ हर तरहका पूरा अनाज अेक खलिहानमें लाना पड़ता है। वहाँ जमींदारका गुमाश्ता अुसे तोलता है और करारके मुताबिक जमींदार और काश्तकारमें बाँट देता है। जिससे काश्तकारोंको कअी तरहसे हैरान होना पड़ता है। अगर जमीनकी नियत की हुअी मालगुजारी किसानको नकद पैसोंमें देना पड़े, तो वह अिन दिक्कतोंसे बच जाता है।

अब जो बात सुझाअी गयी है, वह अूपरका रिवाज अपनानेके पक्षमें नहीं है। अिसमें यह नहीं सुझाया गया है कि सरकार खेतमें पैदा किये गये हर तरहके खाद्य पदार्थोंका अमुक हिस्सा किसानसे वसूल करे। मिसालके लिअे, किसान जवारकी अेक अेकड़ जमीनमें जवारके साथ या अुसके बदलेमें तुवर, कपास, मिर्च और दूसरी कअी चीजें पैदा कर सकता है। सुझाव यह नहीं है कि सरकार अिन सारी चीजोंका थोड़ा थोड़ा हिस्सा वसूल करे। लेकिन जिस तरह अुसने नकद मालगुजारीके बारेमें किया है, अुसी तरह वह अनाजके रूपमें भी कअी बरसोंके लिअे मालगुजारी नियत कर दे — जो नकदीकी कीमतके बराबर हो। मालगुजारीके तौरपर सरकार चावल, गेहूँ, जवार, बाजरी, मक्का जैसे अनाज और जरूरत पड़े तो कपास, तूवर, चना, मूँगफली वगैरा चीजें वसूल कर सकती है, जिनपर वह राष्ट्रकी अहम जरूरतें पूरी करनेके लिअे कण्ट्रोल रखना चाहती है।

नकदीके बजाय खेतीकी पैदावारके रूपमें मालगुजारी तय करते समय दो बातें याद रखना चाहिये। पहली यह कि मौजूदा मालगुजारीकी रकमें अुस समय ठहरायी गयी थीं, जब अनाजकी कीमत बहुत ही कम थी; या, दूसरे शब्दोंमें कहें तो, जब पैसेकी क्रय-शक्ति आजसे बहुत ज्यादा थी। अिसलिअे आजकी मालगुजारीके अेक रुपयेकी क्रय-शक्तिको लड़ाअीके पहलेके किसी मन्दीके सालकी क्रय-शक्तिके बराबर समझें, तो वह अन्याय नहीं होगा। दूसरी बात यह है कि मुद्राके फुलाव और अूँची कीमतोंने देहातके कर्जकी कठिन समस्या हल कर दी है और आर्थिक दृष्टिसे किसानोंको पहलेसे खुशहाल बना दिया है। अिसके खिलाफ, सरकार अब भारी नुकसान अुठा रही है, क्योंकि अुसे मालगुजारीके रूपमें जो पैसा मिलता है, अुसकी कीमत पहलेसे अेक तिहाअी भी मुश्किलसे रह गयी है। नतीजा यह है कि अेक तरफ मुद्रा बनानेवाली सरकारकी क्रय-शक्ति घट गयी है, क्योंकि अुसके पास मालकी यानी मुद्राकी बहुतायत है; अुसी तरह नियत वेतन या मजदूरी पानेवालोंकी क्रय-शक्ति भी बहुत घट गयी है। और दूसरी तरफ कच्चे माल या तैयार मालके हर अुत्पादककी क्रय-शक्ति अितनी ज्यादा बढ़ गयी है कि अुसे न तो अपने मालके जल्द बिकनेकी कोअी परवाह है और न अपनी लाजमी जरूरतोंको बहुत अूँचे दामों पर खरीदनेकी। पहले कारणसे अुसे जल्दी जल्दी माल पैदा करने या पैदावार बढ़ानेमें कोअी दिलचस्पी नहीं है; और दूसरे कारणसे सरकारकी कण्ट्रोल रखने या अुठानेकी कोअी नीति कारगर नहीं होती। लाखों शरणार्थियोंके हिन्दी संघमें आनेसे, अन्नकी कमी होनेसे, खर्चीली फौजी कार्रवाअियाँ करनेसे और लाखों आदमियोंको फिरसे बसानेकी अनेक योजनाओं पर अमल करनेसे आज सरकार सबसे बड़ी खरीदार है और वही बाहरसे भी सबसे ज्यादा माल मँगाती है। अिन सब कामोंके लिअे अुसे सिक्के और नोट निकालने पड़ते हैं। अिस तरह हर रोज काफी पैसा पैदा किया जाता है, जो तेजीसे किसानों या कारखानेदारोंकी जेबों और तिजोरियोंमें चला जाता है। जब तक सरकार मालगुजारी या दूसरे कर अनाज या दूसरी चीजोंके रूपमें सीधे वसूल नहीं करती और अिस तरह नया पैसा पैदा करनेकी जरूरत कम नहीं करती, तब तक यह क्रिया बन्द नहीं हो सकती। सरकार अिन्कमटेक्सके हर रुपयेके बदलेमें अुत्पादकोंसे कपड़े, सीमेण्ट, जरूरी रासायनिक चीजें, वगैरा अमुक मात्रामें माँग सकती है। अिसके अलावा, अुसे खुद भी राष्ट्रीयकरण और विकेन्द्रीकरणके जरिये कुछ तरहकी चीजें तैयार करनी चाहियें। मिलोंके राष्ट्रीयकरणके जरिये और चरखेके द्वारा कपड़ा तैयार करना अिस तरहका अेक महत्त्वपूर्ण काम होगा। गाँवोंमें छोटे पैमाने पर तैयार होनेवाली चीजोंको बढ़ावा दिया जाय और साथ ही अुसी माल या अुसी तरहके मालको बड़े पैमाने पर तैयार करनेवाले कोअी कारखाने हों, तो अुनका राष्ट्रीयकरण किया जाय। अिससे सरकार कीमतों और मुद्रा पर जो कारगर नियंत्रण रख सकेगी, वह सिर्फ सजाके कानून बनाकर और अुनके अमलके हुक्म निकालकर कीमतें तय करनेसे नहीं रह सकेगा।

नयी दिल्ली, ११-८-'४८ **किशोरलाल मशरूवाला**
(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

राजघाट पर श्री विनोबाका भाषण *

(६)

महँगाओ

आप सब लोग जानते हैं कि आजकल वस्तुओंके भाव बहुत बढ़ गये हैं। अिसलिअे लोगोंमें काफी परेशानी है। खासकर कपड़े और अनाजके भाव जब बढ़ जाते हैं, तो गरीबोंको बहुत तकलीफ होती है। सरकार अिस बारेमें सोच रही है और कुछ अुपाय भी कर रही है।

जब कपड़ेका कण्ट्रोल अुठाया गया, तब सरकार और जनताने मिलवालों पर विश्वास रखा था। लेकिन दुःखके साथ कहना पड़ता है कि मिलवालोंने अुस विश्वासको भंग किया है। वे अिसी तरह चालीस सालसे मुल्कको धोखा दे रहे हैं। सन् १९०६में जब देशमें स्वदेशी और बहिष्कारका आन्दोलन चला था, तब भी मिलवालोंने खूब पैसे कमाये। देशकी ओर ध्यान नहीं दिया। बादमें भी जब जब मौका मिला, अुन्होंने देशको बेचकर अपना ही स्वार्थ साधा। सरकार अिस बारेमें जो अुपाय कर रही है, वह कहाँ तक कारगर होगा, भगवान ही जाने! क्योंकि अिस तरहके अुपाय कारगर होनेके लिअे चरित्र-शुद्धिकी जरूरत होती है। चरित्र-शुद्धिके अभावमें वे कम काम देते हैं।

लेकिन मेरे विचारमें अिस समस्याका असली हल तो खद्दर ही है। मिलोंके काममें जो दिक्कतें हैं, वे खद्दरमें नहीं हैं। हिन्दुस्तानमें अक्सर छोटे रेशेवाली कपास होती है। अुसका मिलोंके लिअे कम अुपयोग होता है। अिसलिअे अुसे बाहरके देशोंमें बेचना पड़ता है। बदलेमें बाहरसे लंबे रेशेवाली कपास खरीदनी पड़ती है, जो बहुत महँगी मिलती है। कभी कभी मिलती भी नहीं। ट्रान्सपोर्टका सवाल तो पड़ा ही है। बीचमें कितने ही अेजन्टों और प्रति-अेजन्टोंका सम्बन्ध आता है। अिन तमाम मुश्किलोंसे खादी हमें बचा लेती है। अगर हमारी सरकार चरखेको अुत्तेजन और संरक्षण देती है और हम अुसको अपना लेते हैं, तो हर देहातमें जहाँ कपास होती है, खादी बन सकती है। न तो अुसमें ट्रान्सपोर्टका सवाल रहता है, न अेजन्टोंका। जिस कपाससे मिलें मुश्किलसे दस बारह नम्बरका सूत कातती हैं, अुससे चरखा दुगुना महीन सूत कात लेगा। अिसलिअे यहाँकी कपास भी चरखेके काममें आ जाती है। अिस तरहसे सोचें तो समझमें आयगा कि हमारे कपड़ेका सवाल हल करनेका अेक मात्र सरल अुपाय चरखा ही है, अलावा अिसके कि हम सारी मिलोंको देशकी मिल्कियत बना दें। यथासंभव वैसे करना भी चाहिये। लेकिन अुससे भी आजकी हालतमें पूरा हल नहीं होने वाला है। गरीबोंके स्वराजके खयालसे तो चरखेके सिवा दूसरी गति ही नहीं है। अिस बारेमें अेक दफा मैं यहाँ बोल चुका हूँ। आज मैं अुसे दोहराना नहीं चाहूँगा।

आज तो मुझे अेक दूसरी ही बात कहनी है। वह है अनाजके बारेमें। अनाज पर कण्ट्रोल रखते थे, तो काला बाजार होता था। कण्ट्रोल अुठा लिया, तो दाम बढ़ गये। मेरी रायमें अिसमेंसे निकलनेके लिअे अेक ही रास्ता हो सकता है। अगर सरकार पैसेके बजाय अनाजके रूपमें ही जमीन-महसूल वसूल करे, तो यह मुश्किल हल हो सकती है। सरकारके पास अगर अच्छे अनाजका अेक संग्रह रहे, तो आम बाजार भाव अुससे अनायास ही नियंत्रित हो जाते हैं। किसानोंको भी अनाजके रूपमें लगान चुकानेमें वैसे तो सहूलियत ही होगी, और सरकारको भी अुससे बहुत सहूलियत होगी। आज तो सरकार पुराने सेटलमेंटके आधार पर लगान वसूल करती है। अगर पंद्रह साल पहले सरकार किसी किसानसे दस रुपये लेती थी, तो आज भी अुतना ही लेती है। लेकिन आजके दस रुपये अुस जमानेके तीन रुपयेकी कीमत रखते हैं। नतीजा यह है कि आजकी सरकार दरिद्री बन गयी है। फिर यह भी सोचिये कि पैसेमें 'सेटलमेंट' हो भी कैसे सकता है? 'सेटलमेंट'का अर्थ होता है पक्की बात। पैसेकी कीमत रोज बदलती रहती है। वह (पैसा) पक्की बात क्या कर सकता है? वह तो लफंगा है। जो आज अेक बात कहता है, कल दूसरी कहता है, और परसों तीसरी कहता है, अुसीको हम लफंगा कहते हैं न? वही पैसेकी हालत है। अुसी (पैसे)को हमने अपना कारबारी बनाया है। अुसीसे हमारी सरकार घाटेमें आ गयी है। और, लोग भी तंग हो रहे हैं। पैसेकी असली कीमत तो कोअी है ही नहीं। अिसलिअे अुसकी कीमत चढ़ा और अुतरा करती है। अनाजकी कीमत न चढ़ती है, न अुतरती है। अुसकी पोषक शक्तिमें ही कमीवेशी हो तो दूसरी बात है। लेकिन वैसा कम होता है। यह जरूर है कि अिसमें सरकारको अपने कोठार और अपनी दूकाने रखनी पड़ेंगी। सरकारको हर हालतमें अैसे कारोबार करने ही पड़ेंगे, और वह कर भी सकती है। अिस व्यवस्थाके अनुकरणसे, और अुसके साथ साथ, देहातोंमें मजदूरी भी अनाजके रूपमें ही दी जाने लगेगी। अिस सबका परिणाम यह होगा कि आज भावोंमें जैसा चढ़ाव अुतार होता है, वैसा कम होगा। और जो भी होगा, अुसका बहुतों पर असर नहीं होगा।

दा० मु०

* ता. ६-८-'४८की प्रार्थना-सभामें दिया हुआ विनोबाजीका भाषण।

मेहनतका तत्त्वज्ञान *

पूज्य बापूजीके देहान्तके बाद अुनकी यादमें बम्बअी-दादर खादी भण्डारके संचालक श्री कन्हैयालाल मालपुरवालाने शहरके जुदे जुदे वार्डोंमें हर मासकी ३० तारीखसे अेक सप्ताहका सामुदायिक सूत-कताअीका अेक कार्यक्रम जारी किया है। पिछले ३० जूनसे शुरू हुआ सप्ताह राष्ट्रीय मिल मजदूर संघके मातहत मजदूर मंज़िलमें मनाया गया था। क्योंकि मजदूरोंके लिअे अेक साथ सात दिन तक कताअीमें हिस्सा लेना मुश्किल था, अिसलिअे कार्यक्रममें थोड़ा फ़र्क कर दिया गया और हर सप्ताहके शनिवार और रविवार अिस कार्यक्रमके लिअे रखे गये। और पाँच सप्ताह तक अुसे चलाया गया।

अिस कार्यक्रममें श्री केदारनाथजी पहलेसे ही दिलचस्पी लेकर मार्गदर्शन करते रहे हैं। बम्बअी सरकारके मंत्री भी अिसमें कुछ न कुछ हाथ बँटाते रहे हैं। मजदूरोंके सप्ताहका अुद्घाटन श्री वर्तकने किया और श्री तगासेने अुसका अुपसंहार किया था। अस्सी भाअी बहनोंने गांधीजीके प्रति भक्ति और श्रद्धा रखकर अिस कताअी यज्ञमें हिस्सा लिया और १४० गुण्डी सूत काता। अिसका अभिनन्दन करते हुअे श्री नाथजीने कुछ अच्छी बातें कहीं। वे बोले:

> "यह सप्ताह श्रमजीवी (शरीरसे मेहनत करके अपना गुजारा करनेवाले) भाअी बहनोंकी ओरसे सफलतापूर्वक मनाया गया है। बुद्धिजीवी (दिमागी काम करके निर्वाह करनेवाले) लोग अकलके जोरपर बहुत काम करते हैं सही, लेकिन हाथसे काम करनेका अुन्हें मुहावरा नहीं होता, न शौक ही। श्रमजीवी लोगोंको मेहनत करनेकी आदत होती है। अुनके हाथपैर अिस प्रकारकी तालीमसे काबिल बने होते हैं। वे अैसे काम जल्द सीख सकते हैं और अुन्हें पूरा कर सकते हैं। दिमागी आदमियोंके लिअे जब अैसे काम करनेका मौका आता है, तो वे बड़ी अड़चन महसूस करते हैं। क्योंकि अुन्होंने हाथसे काम करना सीखा ही नहीं। दूसरोंसे काम करा लेना ही अुनका रोजका काम होता है। मेहनती आदमी मेहनतसे डर या अूब नहीं जाता। वह घबड़ाता नहीं। वह स्वावलम्बी होता है, और कभी कहीं अटकता नहीं।

* मराठी दैनिक 'नवभारत' के आधार पर।

"लड़ाअीमें भी दिमागी कामकी अुतनी जरूरत नहीं, जितनी मेहनतके कामोंकी होती है। किसानोंको हमेशा मेहनत करनी पड़ती है। कुदरतसे झगड़ना पड़ता है। अिसलिअे लड़ाअीमें भी यही लोग काम करनेके लिअे तैयार होते हैं।

"कअी लोग गांधीजीसे सवाल करते थे कि चरखेसे क्या होनेवाला है? काम करनेकी आलसकी वजहसे अैसे सवाल दिमागमें आते हैं। जिन लोगोंमें हाथपैरकी मेहनतको टालनेकी वृत्ति मजबूत होती है, अुन्हींके ये सवाल हैं। अुन लोगोंसे गांधीजी पूछते थे कि अगर चरखेसे स्वराज्य नहीं मिलेगा, तो बताअिये कि वह किस चीजसे मिलेगा। अिस सवालका अुनके पास कोअी जवाब नहीं था। क्योंकि अुन्हें सिर्फ दलीलबाजी करना ही आता था। देशकी प्रगति रचनात्मक कामोंसे ही हो सकती है। अिसे खयालमें रखकर गांधीजीने देशकी माली व्यवस्थाके बारेमें अपना अेक तत्त्वज्ञान बनाया। महात्माजीका यह तत्त्वज्ञान न सिर्फ हमारे देशकी सुख-शान्तिके लिअे, बल्कि सारी दुनियाकी सुख-शान्तिके लिअे जरूरी है। बहुत गहरा विचार करनेके बाद गांधीजीने चरखेकी योजना निकाली। अिस चरखेके पीछे बहुत गहरा खयाल रहा है। अिसमें सबका कल्याण भरा है।

"दुनियाकी तरफ देखें तो पता चलेगा कि आज हर देश अिस भारी चिन्तामें पड़ा हुआ है कि जिन्दा कैसे रहा जाय। कोअी कह नहीं सकता कि आअिन्दा दस सालमें क्या होगा। आज विनाशकी जो नीति चल रही है, वह गलत है। अुससे मानव जाति कभी सुखी नहीं हो सकती। जब हर अेकका यह विश्वास हो जायगा कि दूसरे भी जियें और मैं भी जीअूँ, तभी अिन सवालोंका हल मिलेगा।

"जिस सिद्धान्तपर आज दुनियाका कारोबार चल रहा है, वह यह है कि दूसरे मेहनत करें और युक्ति-प्रयुक्तिसे हम अुसका फायदा अुठावें। खंडणी (नज़राना), जमींदारी, नफाखोरी (पूँजीवाद), सूदखोरी वगैरा सब अिसीसे पैदा हुअे हैं। अिसके मूलमें मेहनतको टालकर सुख भोगनेकी भावना है। भगवानने हरअेकको सब साधन दिये हैं। तब क्यों हरअेक मनुष्य खुद मेहनत नहीं करता? हरअेकको मेहनत करनी चाहिये, अैसा कुदरतका नियम है। जिन चीजोंको हमें जरूरत है, अुन्हें पानेके लिअे हमें ही मेहनत करनी चाहिये। यह सच है कि हर आदमी सब काम नहीं कर सकता। लेकिन तब हरअेकको दूसरोंके लिअे भी मजदूरी करनी चाहिये। हरअेकको यह व्रत लेना चाहिये कि हमारी मेहनतका दूसरोंको दें, तभी हम अुनकी मेहनतका लें; कोअी चीज मुफ्त न लें। तभी सब झगड़े-फिसाद बन्द हो सकते हैं। मेहनतको टालनेकी वृत्ति ही सब झगड़ोंका मूल है।

"अगर कोअी यह मानता हो कि धनी लोग सुखी हैं, तो वह भूलता है। सुखका मसाला जितना मेहनती आदमीके पास है, अुतना धनीके पास नहीं। क्योंकि मेहनतीको कहीं लाचार या निरुपाय होकर बैठना नहीं पड़ता। अुसमें मेहनत करके अपना पेट पालनेकी हिम्मत है। अिसलिअे वह कअीं तरहकी मुसीबतोंसे बच जाता है।

"दूसरोंकी मेहनतपर जिन्दा रहनेकी अिच्छासे ही पाप बढ़ता है। अिसलिअे मेहनतकी महिमा समझकर हमें पूर्ण स्वावलम्बी होना चाहिये। अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेनी चाहियें। महात्माजीका यह अुपदेश हमें अमलमें लाना चाहिये और अपने हाथ-पैरोंका पूरा अुपयोग कर लेना चाहिये। मेहनती जीवनका सिद्धान्त जिसके दिलमें अुतर जायगा, वह अपनी जरूरतें कम करता जायगा। गांधीजीने हमें यह बताया कि दुनियाके पेचीदे सवाल और झगड़े कैसे मिट सकते हैं, और साथ ही अुसका साधन भी बताया है।

"नियमसे सूत कताअी करनेका अुन्होंने जो आदेश दिया है, वह स्वावलम्बन कोअी काल्पनिक (फरज़ी) या थोथी चीज नहीं है। नियंत्रणके दिनोंमें जब धनिकोंको कपड़ेकी तंगी मालूम होती थी, तब सूत कातनेवालोंको वह मालूम ही नहीं होती थी। चरखेमें बड़ी ताकत है। बेचैन लोगोंको चरखेसे सुख-शान्ति हासिल करनेका सुनहरी अवसर है। जो लोग चरखेमें, चरखेके तत्त्वज्ञानमें, और अुसके गूढ़ अर्थमें तन्मय हुअे हैं, अुन्हें सुख ही मिला है। अीश्वरकी मेहरबानी अिससे दूसरी क्या चीज हो सकती है? जो प्रत्यक्ष काममें लगा दे, वही सच्ची सिद्धि है।

"गांधीजी पुण्य-पुरुष थे, कर्मयोगी थे। हरअेक व्यक्तिका बड़प्पन अुन्हींके रास्ते चलकर मनाना चाहिये। महात्माजी-जैसे कर्मयोगीको शब्दोंकी श्रद्धांजलि नहीं दी जा सकती। अुन्हें तो कर्मकी ही श्रद्धांजलि दी जानी चाहिये। अुनके बताये हुअे कामोंमेंसे किसी अेकमें अपना जीवन लगा देना ही अुनकी सच्ची श्रद्धांजलि है। आप लोगोंने १४० गुण्डी सूत निकाला, यह बड़ा अच्छा काम किया है।"

केदारनाथ

सब पुर्जे बराबर

[नीचे लिखे हुअे विचार सब विचारशील मनुष्योंके सोचने लायक हैं। —कि० मशरूवाला]

समाज या जमाव दो प्रकारका होता है। अेक चावलोंके ढेर जैसा और दूसरा घड़ीके पुर्जों जैसा। जमावमें बहुवचनका ही अर्थ है। अूपरके अुदाहरणमें दोनों जमाव अेक ही प्रकारके नहीं हैं। यदि चावलके ढेरमेंसे कुछ हिस्सा नष्ट हो जाय, तो अुसका बाकीके चावलोंपर कुछ भी असर नहीं पड़ता। मगर घड़ीके पुर्जोंके समूहमेंसे अेक भी पुर्जा दूसरेसे अलग कर दिया जाय, तो घड़ी अुसी समय बन्द हो जायगी। क्योंकि वह अेक अैसा जमाव है, जिसमें अेक पुर्जेका दूसरेसे बहुत घना सम्बन्ध है। लेकिन चावलके सम्बन्धमें अैसा नहीं है। अुसमें हर दाना स्वतंत्र है, अेक दूसरेसे बँधा हुआ नहीं है। अिस तरह समुदायके दो प्रकार हुअे: अेक बधा हुआ, दूसरा स्वतंत्र।

अिसी तरह समाजमें मनुष्य समुदाय भी अेक दूसरेसे बँधा हुआ है, क्योंकि अेक आदमीके कामका असर सारे समाजपर पड़ता है। जैसे, अेक व्यक्तिने हैजेसे बचनेके लिअे किसी दवाकी खोज की, तो अुस दवासे सारे समाजको लाभ अुठानेका हक है, न कि अकेले खोजनेवालेको ही। अिसी तरह यदि कोअी बुरा काम करता है, तो अुसका भी कमी कभी सारे समाजको दण्ड भोगना पड़ता है। जैसे, मान लीजिये कि अेक आदमी कुम्भके मेलेमें गया और वहाँसे हैजा लेकर आया। हैजा अुसे हुआ सो हुआ, लेकिन औरोंको भी अुस बीमारीका शिकार होना पड़ा।

अिसी प्रकार अेकके कर्मका फल सारे समाजको भोगना पड़ता है। मान लीजिये कि कुछ जातियाँ मिलकर अेक जातिको गिराना चाहती हैं, तो वे खुद ही अपने पैरोंपर कुल्हाड़ी मारती हैं। क्योंकि अिस जातिके गिर जानेसे समाजमें अुसकी जगह खाली हो जायगी। जैसे घड़ीमेंसे अेक पुर्जा निकालनेसे घड़ी बन्द हो जाती है, अुसी प्रकार अेक जातिको अपनी जगहसे गिरा देनेसे समाजका काम थम जाना अनिवार्य है। अिसी तरह अेक दूसरेको तोड़नेकी कोशिश करनेसे न तो वह अकेली जाति ही अपनी या अपने समाजकी अुन्नति कर सकती है, न और जातियोंको, जो अुसे अपने सम्पर्कसे हटानेका प्रयत्न करती हैं, कुछ लाभ मिलता है; बल्कि नुकसान ही होता है।

हिन्दमें आज जितने अछूत यानी हरिजन हैं, वे सब अपना काम छोड़ दें, तो लोगोंको कितना कष्ट अुठाना पड़े? क्या समाजने कभी

www.vinoba.in

विचार किया है? जैसे घड़ीसे अेक पुर्जा हटाने पर घड़ी बन्द हो जाती है, वैसे ही यह पेशेवर जातिरूपी पुर्जा हट जाय तो समाजका काम बिगड़ जायगा।

हम अछूतोंको मन्दिरमें जाने, कुओं पर चढ़ने अित्यादि बातोंसे रोकते हैं। अुन्हें सार्वजनिक कार्योंमें भाग नहीं लेने देते। क्या वे समाजका काम नहीं करते? क्या समाजको अुनसे कुछ सहारा नहीं है? यदि हर जाति अेक दूसरेकी मदद पर जिन्दा है, तो अछूतोंको भी प्रत्येक सार्वजनिक कार्योंमें बराबरीका हक होना जरूरी है। अछूत जो कुछ भी करते हैं, वह अपने ही लिअे नहीं करते, समाजके लिअे करते हैं। तब अुनमें अपने नियत कर्मोंसे अशुद्धि नहीं आ सकती, क्योंकि वे अपने कर्मोंसे समाजका फायदा करते हैं। अगर अुनके पेशेके कारण वे अछूत होते हैं, तो क्यों न वे अुन कामोंको छोड़ दें? फिर तो अपनेको अुच्च समझनेवाली जातियोंको वे काम करने ही पड़ेंगे। क्या अैसी हालतमें सब जातियाँ अुनके बराबरीकी नहीं हो जातीं?

तब यही नतीजा निकलता है कि कैसा भी काम करनेसे मनुष्य नीचा या अूँचा नहीं हो सकता। अुसे समाजमें बराबरीका हक रखनेका अधिकार है। सिर्फ अुसका काम अैसा होना चाहिये, जो समाजके लिअे आवश्यक हो। अगर अछूत जातियोंको हम अपनेसे अलग रखेंगे, तो हमें ही अुनमें जाकर मिलना होगा। अिसलिअे जरूरी है कि अुन्हें ही हम अपनेमें शामिल कर लें। जब कि वे समाजके कार्यमें हमारा बराबर हाथ बँटाते हैं, तो समाजको चाहिये कि अुन्हें सार्वजनिक क्षेत्रोंमें समान अधिकार दे।

पुरुषोत्तमलाल झुनझुनवाला

बापू—मेरे मसीहा

(३)

२० जुलाअी १९४३ को विद्याका स्वर्गवास हुआ। तबसे मैं हर माहकी २० तारीखको शास्त्रीय विधिसे मनाता था। मैं दिनभर अुपवास रखता और शामको अुसके नामसे गरीबोंको भोजन कराता तथा दान देता था। लेकिन मुझे विश्वास नहीं था कि आश्रममें भी मैं अिसी तरह यह दिन मना सकता हूँ या नहीं। मैंने अुसके बारेमें बापूसे सलाह ली और अुन्होंने मुझे यह अुपदेश दिया:

"वह (२० वीं) तारीख मनानेका अुम्दा तरीका तो यह है कि तुम सारे दिन कातते रहो या तुम्हारे पसन्दके आश्रमके किसी भी काममें लगे रहो और अुसके साथ रामनाम जोड़ लो।"

जब अुनसे यह पूछा गया कि क्या गरीबोंको खिलाना ठीक है? तो अुन्होंने लिखा:

"बिलकुल गैरजरूरी है। जो सचमुच जरूरतमन्द हैं, अुन्हें तुम भले ही कुछ दे सकते हो।"

दूसरे दिन (ता० २०-१०-'४४) अपनी रोजमर्राकी सुबहकी बातचीतके बाद, बापूने यह लिखा:

"आजका दिन तुम्हारे लिअे शुभ दिन है। विद्याको मैंने काफी रुलाया था। वह तुम्हारे जैसे रो देती थी और कहती थी — भगवान बताओ। मैंने अुसे डाँटा और कहा — भगवान चरखेमें दिखेगा। मेरे पास बैठ कर नहीं दिखेगा। आखिर वह समझ गयी।

"हम यंत्र हैं और यांत्री भी। शरीर यंत्र है, आत्मा यांत्री है। आज तुम्हारे यंत्रसे यंत्रवत् काम लेना है और मुझे हिसाब देना है।"

बापू जब कहते कि चरखेमें तुम्हें भगवान दिखेगा, तो अुनकी बात मैं समझ न पाता। अिसपर २१-१०-'४४ को मैंने अिसका विशेष खुलासा करनेके लिअे अुनसे प्रार्थना की। नतीजा यह हुआ कि वे मुझसे बड़ी देर तक बातें करते रहे और आखिरमें अपनी सारी बातचीतका सार अुन्होंने अिस तरह लिखा:

"मनुष्य जिसका ध्यान करता है, अुसके मारफत अीश्वरको निश्चित देखता है। चरखा सबसे अच्छा प्रतीक है और अुसका दृश्य फल भी है।"

अिसपर मैंने बापूसे कहा कि जो भी मैं अिसके खिलाफ लगातार कोशिश करता हूँ, फिर भी अिस सूनेपनने मुझे अिस तरह घेर लिया है कि मुझे लगता है कि अिस दर्दनाक हालतसे छुटकारा दिलानेके लिअे कोअी न कोअी साथी मेरे साथ चाहिये। यह सच है कि अीश्वर सदा हमारे साथ रहता है। लेकिन आखिर अिन्सान तो अिन्सान ही ठहरा। वह अपनी मदद और ताकत पानेके लिअे स्वभावसे अपनी जातिकी ओर ही झुकता है। अिसपर बापूने लिखा:

"मनुष्यको मनुष्यका सहारा चाहिये, अिसीलिअे तो आश्रम वगैरा संस्थायें रहती हैं। मनुष्यका सहारा सान्निध्यसे ही होता है, अैसा नहीं है। कोअी डाक द्वारा करते हैं, कोअी सिर्फ विचारसे, कोअी मरे हुअेके सद्वचनोंसे, जैसे हम तुलसीदाससे रोज मिलते हैं।"

दूसरे दिन २२-१०-'४४ को विद्याकी 'आशा'की प्यारी तसवीर पर दस्तखत करते हुअे अुन्होंने ये दो लकीरें लिख दीं:

"आशा अमर है। अुसकी आराधना कभी निष्फल नहीं जाती।"

और २३-१०-'४४ को मैंने अिच्छा जाहिर की कि मैं अपने फालतू समयमें अुन्हींके साथ रहना चाहता हूँ, जिससे मेरा दिमाग अिधर अुधर न भटकता फिरे। अिसके जवाबमें बापूने लिखा:

"मेरे पास बैठनेमें कोअी हानि नहीं है। लेकिन अैसे बखत पर, जैसे महादेव करता था और कृपलानी, वैसे तकली चलाना। फिर अीश्वरके समयकी चोरी नहीं होगी। तकली हमारा मूक मित्र है। वह कुछ आवाज ही नहीं करती है। तकली चलाते समय हम सब कुछ देख सकते हैं और सुन सकते हैं। मैं तो यहाँ तक जाता हूँ कि अीश्वर कृपा होगी, तो अिस तरह कर्ममें जुटे हुअे रहनेसे कान भी खुल जायँ। लेकिन जब अिस तरह कर्मयोगी बनागे, तब कानकी परवाह ही थोड़ी रहेगी। वानर गुरु तो जान-बूझकर कान बन्द करता है, क्योंकि आसपासकी आवाज अुसके रास्तेमें रुकावट डालती है।"

अुस दिनसे करीब करीब मैं अपना सारा फालतू समय बापूकी झोंपड़ीमें और अुनके नजदीक ही गुजारता। मुझे कबूल करना चाहिये कि अुनकी पवित्र मौजूदगी हमेशा मेरे पर जादूका असर करती थी। वह पहले तो मुझे दिलासा देती, फिर प्रेरणा देकर मुझे सही काम सही तरीकेसे करनेके लिअे अुत्साहित करती थी, और मुझे अपने संकुचित घेरेसे निकालकर बापूके सारी दुनियासे सम्बन्ध रखनेवाले कामोंमें कुछ कुछ लगा देती थी।

२४-१०-'४४ की सुबहमें बापू मुझे खास करके प्रसन्नचित्त और सुखी दिखाअी दिये। वे कुछ बच्चोंसे आनन्दपूर्वक हँसी मजाक कर रहे थे। जब अुन्होंने मुझे बहुत आश्चर्यचकित देखा, तो कहने लगे कि मैं बच्चोंसे बहुत ही प्यार करता हूँ और कहीं भी अितनी स्वतंत्रता नहीं महसूस करता; जितनी अुनके साथ। बच्चोंके चले जानेके बाद मैंने बापूसे पूछा कि अितनी बेशुमार चिन्ताओं और जिम्मेदारियोंके बीच भी आप अपनी शान्ति और आनन्द कायम रखते हैं; आखिर अिस अटूट आनन्दका रहस्य क्या है? अिसके जवाबमें अुन्होंने यह लिखा:

"मेरी शान्ति और मेरे विनोदका रहस्य है मेरी अीश्वर यानी सत्यपर अचलित श्रद्धा। मैं जानता हूँ कि मैं कुछ कर नहीं सकता हूँ। मुझमें जो अीश्वर है, वह मुझसे सब कुछ कराता है। तो मैं कैसे दुःखी हो सकता हूँ? मैं यह भी जानता हूँ कि वह जो कुछ मुझसे कराता है, सब मेरे भलेके लिअे ही है। अिस ज्ञानसे भी मुझे खुश रहना चाहिये। 'था'को

www.vinoba.in

अीश्वर ले गया, सो 'बा'के भलेके लिअे और मेरे भी भलेके लिअे। अिसलिअे 'बा'का वियोग मुझे दुःख देनेवाला नहीं होना चाहिये।

"अिस वास्ते विद्याकी मृत्युसे तुम दुःख मानना पाप समझो।"

अिस तरह बापू हमेशा ही मेरी बुद्धिको भोजन देते रहते थे, जिससे मेरे अुद्विग्न मनको शान्ति मिले। अुन्हें मेरी तन्दुरुस्तीका भी बराबर खयाल रहता था। वे अच्छी तरहसे जानते थे कि जब तक मेरे कान ठीक नहीं हो जाते, मैं सचमुच शान्त नहीं हो सकता। जो भी वे बार बार मुझे कहा करते थे कि मैं अपने बहरेपनको अीश्वरकी देन ही समझूँ, फिर भी मैं अुसपर सोचा ही करता था। मैं निश्चित ही अुसे बाधारूप मानता था और अिसलिअे स्वाभाविक ही, अुससे छूट सकूँ तो छूटना चाहता था। अिसलिअे जो भी वैद्य और कुदरती अिलाज करनेवाले अुस वक्त आश्रममें आये, अुनमेंसे हरअेकसे बापूने मेरे कानोंके बारेमें सलाह ली। आखिर अुन्होंने तय किया कि मैं भीमावरम् (आन्ध्र देश) में कुदरती अुपचारके लिअे रहूँ। अुसके लिअे मैं २८–११–'४४को जानेवाला था। और जैसे जैसे आश्रमसे विदा होनेका दिन नजदीक आ रहा था, मैं अेक तरहकी घबराहट महसूस करता था। मैं बापूकी मीठी सोहबतका और अुनके प्रेरणात्मक अुपदेशोंका, जो वे मुझे रोज देते थे, अितना आदी हो गया था कि अुनसे जुदा होना — जो भी वह अुनकी आज्ञाके अनुसार ही था — मुझे बहुत मुश्किल मालूम हो रहा था। मुझे लगता था कि अुनसे छूट जानेका मुझे बहुत तीखा दर्द होगा, और दूसरी अैसी कोअी चीज नहीं है, जो अुस कमीको पूरी कर सके। मैं अिस तरहकी परेशानीमें ही था कि मुझे अेक विचार आया। मैं बापूसे ही क्यों न कहूँ कि वे मेरे लिअे रोज कुछ लिखा करें और मेरे मनकी सान्त्वनाके लिअे नियमित डाकसे भीमावरम् भेज दिया करें? अिसलिअे बड़ी सुबह मैंने बड़े संकोचके साथ बापूको यह बात कही:

"बापू, मुझे अेक विचार सूझा है। मैं नहीं समझता वह आपको किस हद तक मंजूर होगा।"

बापू अपना पत्र-व्यवहारका ढेर देखने ही वाले थे। अुन्होंने अूपर देखकर धीरेसे पूछा — "कहो, वह क्या है?"

"बापू, यह मुझे कल रातको ही सूझा कि यदि आप रोज कुछ न कुछ मेरे लिअे लिखते रहें, तो कितना अच्छा हो। आप जानते हैं कि मैं अपने बहरेपनके कारण करीब करीब अिस दुनियासे कट-सा गया हूँ। यह आपका रोजका सम्पर्क मेरे लिअे तो सचमुच वरदान ही हो गया है। अिसने मुझमें अेक नया अुत्साह भर दिया और मेरे बेचैन मनको बहुत शान्ति दी है। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि मैं अलग रहूँ, तो भी आपका अमूल्य सम्पर्क किसी न किसी रूपमें बना रहे। अिसीलिअे मैं आपको सुझा रहा हूँ कि आप मेरे लिअे रोज कुछ न कुछ लिखा करें, फिर वह कुछ लकीरें ही क्यों न हों। अिससे मुझे बहुत तसल्ली मिलेगी।"

बापूने बड़े ध्यानसे सचमुच बापू-जैसे तरीकेसे ही मेरी बात सुनी। जब मेरा कहना पूरा हुआ, तो कहने लगे — "तुम्हारा प्रस्ताव बिलकुल ठीक है। मैं अुस पर विचार करूँगा। खातरी रखो।"

बापूका जवाब अपने पक्षमें पाकर मुझे बड़ी शान्ति मिली। दूसरे दिन जब मैंने फिर बापूसे अपनी विनती की, तो अुन्होंने जवाब दिया कि वह बात अभी भी 'विचाराधीन' है। तीसरे दिन तो मैंने कह दिया कि मैं अिस कामके लिअे खुले कागजोंका अेक अलबम तैयार करवा रहा हूँ। अुसे आपके पास रख दूँगा, ताकि आपको जब कभी लिखनेकी प्रेरणा या अिच्छा हो, आप तुरन्त लिख सकें। खुशीकी बात थी कि बापूने वह मंजूर कर लिया और मैंने आश्रमके अेक मित्रसे वह अलबम तैयार करवानेमें जरा भी देर नहीं की। मैंने १६–११–'४४को अलबम बापूको सौंप दिया। अगले कुछ दिनों मैं चुप रहा और सब बापूकी मर्जी पर छोड़ दिया। २२–११–'४४की सुबह जिस वक्त बापूने अपने दमकते हुअे चेहरेसे मुझे कहा कि "आनन्द, मैंने तुम्हारे लिअे लिखना शुरू कर दिया है और वह भी २१ तारीखसे", तो अुस वक्त मुझे जो खुशी हुअी, अुसे मैं शब्दोंमें बयान नहीं कर सकता।

मैं बेहद खुशीसे बोला — "क्या सचमुच ही शुरू कर दिया? मेरे बापू!" और तुरन्त ही मेरा सिर सच्ची कृतज्ञतासे अुनके सामने झुक गया। अुन्होंने जो २० तारीखका सूचक अुल्लेख किया, अुसका महत्त्व मैं ठीक ठीक समझ गया; क्योंकि अिस दिनको मैं बहुत ही पवित्र मानता था और विद्याके स्वर्गवासके बाद, जैसा मैंने पहले ही कह दिया है, अुसकी यादमें हर महीने अिसे मनाया करता था। अुस दिन (२०–११–'४४) से करीब दो साल तक बापू रोज मेरे लिअे अेक अुपदेश लिखते रहे। जब तक मैं भीमावरम्में अिलाजके लिअे रहा तब तक और बादमें भी लम्बे समय तक मेरा अेक आश्रमका प्यारा मित्र बापूका पिछले दिनका लिखा अुपदेश मुझे रोज डाकसे भेज दिया करता था। ये विचारकण अेकदम अनोखे हैं, और अुनके जैसे दूसरे कहीं नहीं मिल सकते। बापूने अुन्हें अपने दिमागसे बिलोकर मक्खनकी तरह निकाला है। मेरे लिअे तो वे मेरे प्यारे बापूके आशीर्वाद और कीमती विरासत हैं, और मुझे अिसमें कतअी शक नहीं कि सारी दुनिया भी अुन्हें मेरी ही तरह मानेगी। अिन विचारोंका पहला हिस्सा मैं निकट भविष्यमें ही 'बापूके आशीर्वाद' के नामसे निकालनेवाला हूँ। लेकिन अिस भव्य पुस्तकके बारेमें मेरे अगले लेखमें लिखूँगा।

अिलाहाबाद, २६–५–'४८
(अंग्रेजीसे)

आनन्द टी० हिंगोरानी

सूचना

यह जाहिर करते हुअे खुशी होती है कि नवजीवन कार्यालयकी अेक शाखा अिन्दौरमें भी खुल गयी है। 'हरिजन' साप्ताहिकोंके अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दुस्तानी (नागरी और अुर्दू) चारों संस्करण और दूसरे सब प्रकाशन वहाँ मिल सकते हैं। शाखाका पूरा पता यह है:

नवजीवन कार्यालय (शाखा)
५, गांधीभवन,
यशवन्त रोड, अिन्दौर

हमारा नया प्रकाशन

आरोग्यकी कुंजी

लेखक: **गांधीजी**; अनुवादक: **सुशीला नय्यर**

गांधीजीके शब्दोंमें अिस किताबको "विचारपूर्वक पढ़नेवाले पाठकों और अिसमें दिये हुअे नियमोंपर अमल करनेवालोंको आरोग्यकी कुंजी मिल जायगी, और अुन्हें डॉक्टरों तथा वैद्योंकी देहली नहीं तोड़नी पड़ेगी।"

कीमत १० आना डाकखर्च ०–२–०

व्यवस्थापक, नवजीवन कार्यालय
पोस्ट बॉक्स १०५, अहमदाबाद

विषय-सूची

		पृष्ठ
यह परचा	... किशोरलाल मशरूवाला	२१३
अच्छे काम भी निष्फल क्यों हो जाते हैं?	... बलवन्तसिंह	२१४
'सवाअी बम'	... जे० सी० कुमारप्पा	२१५
अनाजके रूपमें मालगुजारी	... किशोरलाल मशरूवाला	२१६
राजघाट पर श्री विनोबाका भाषण — ६	... दा० मु०	२१७
मेहनतका तत्त्वज्ञान	... केदारनाथ	२१७
सब पुर्जे बराबर	... पुरुषोत्तमलाल झुनझुनवाला	२१८
बापू — मेरे मसीहा — ३	... आनन्द टी० हिंगोरानी	२१९

www.vinoba.in